सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-28 अंक-17 7 से 21 सितम्बर, 2013 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

कॉमरेड माओ त्से-तुंग लाल सलाम

26.12.1893 9.9.1976

''क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं को शिक्षा देने के लिए जिस ज्ञान की और आम जनता को शिक्षा देने के लिए जिस ज्ञान की जरूरत है – इन दोनों के बीच जहाँ एक मात्रात्मक अन्तर है, वहीं उनके बीच एक घनिष्ठ सम्पर्क भी है; इसी तरह संस्कृति का स्तर ऊंचा उठाने और लोकप्रिय बनाने के बीच एक मात्रात्मक अन्तर के साथ-साथ एक घनिष्ठ सम्पर्क भी है। क्रान्तिकारी संस्कृति विशाल क्रान्तिकारी जनता के हाथों में ताकतवर क्रान्तिकारी हथियार है। क्रान्ति आने से पहले क्रान्तिकारी संस्कृति वैचारिक तौर पर क्रान्ति की जमीन तैयार करती है; क्रान्ति के समय यही क्रान्तिकारी संस्कृति साझे क्रान्तिकारी मोर्चे में एक महत्वपूर्ण, सचमुच में अपरिहार्य संग्रामी मोर्चा होती है। क्रान्तिकारी सांस्कृतिक कर्मी इस सांस्कृतिक मोर्चे में विभिन्न स्तर के सेनानायक होते हैं। ''क्रान्तिकारी सिद्धांत के बिना कोई क्रान्तिकारी आन्दोलन नहीं हो सकता''–इससे देखा जा सकता है कि प्रैक्टीकल क्रान्तिकारी आन्दोलन के लिए क्रान्तिकारी सांस्कृतिक आन्दोलन कितना महत्वपूर्ण है। सांस्कृतिक एवं प्रैक्टीकल आन्दोलन, दोनों जनता के ही आन्दोलन हैं।''

– माओ त्से-तुंग

धूर्ततापूर्ण बहाने की आड़ में सार्वभौम सीरिया पर आक्रमण करने के अमेरिकी साम्राज्यवादियों के घृणित प्रयास की एसयूसीआई (सी) द्वारा घोर निन्दा

इस मनहूस कदम को नाकाम करने के लिए दुनिया के शान्तिकामी लोगों से आह्वान

एसयूसीआई (सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 29 अगस्त को निम्न बयान जारी किया :-

अपने विरोधियों के खिलाफ रासायनिक हथियारों के कथित इस्तेमाल के बहाने की आड़ में कुख्यात अमेरिकी साम्राज्यवादियों और इसके अन्य साम्राज्यवादी सहयोगियों द्वारा सीरिया पर आक्रमण करने के अति स्वेच्छाचारी और लूटेरे कदम की हम घोर निन्दा करते हैं इन्होंने कपटपूर्ण ढंग से इसी तरह का बहाना इराक पर भयंकर सैनिक आक्रमण करने से पहले बनाया था और इराक जैसे देश में भयंकर तबाही और विनाश किया था। हम दुनिया के तमाम जंग-विरोधी अमनपसन्द लोगों का आह्वान करते हैं कि वे एक और सार्वभौम राष्ट्र को कुचलने के अमेरिकी साम्राज्यवादियों के इस आसन्न घृणित प्रयास के खिलाफ और पश्चिम एशिया में सशस्त्र संघर्षों को भड़काने और मानव जाति को युद्ध की विभीषिका की ओर एक बार फिर धकेलने के उनके घृणित षड्यंत्र को रोकने की खातिर एकजुट हो कर आगे आयें। हमारा दृढ़ मत है कि अपने भविष्य के बारे में जैसा वे चाहें वैसा फैसला करने के लिए सीरिया के लोगों को बिल्कुल स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए और उनकी इस जायज मांग पर सीरिया के लोगों का साथ देना चाहिए और सीरिया को कुचलने व दुनिया पर अपना प्रभुत्व जमाने के अमेरिकी साम्राज्यवादियों के घृणित षड्यंत्र को विफल करने की अपील हम दुनिया के तमाम देशभक्त लोगों से करते हैं।

दिल्ली गैंग रेप के किशोर अपराधी को कम सजा देने पर रोष प्रदर्शन

जन्तर मन्तर पर प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए डॉ. एच.जी.जयालक्ष्मी

नई दिल्ली : 16 दिसम्बर 2012 को हुए दामिनी बलात्कार काण्ड और हत्या के आरोपी नाबालिग को जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड द्वारा मात्र तीन वर्ष की सजा दिए जाने के विरोध में 1 सितम्बर को ए.आई.एम.एस.एस., ए.आई.डी.एस.ओ. और ए.आई.डी.वाई.ओ. दिल्ली के तत्वावधान में जन्तर-मन्तर पर एक विरोध प्रदर्शन किया गया। दिल्ली के विभिन्न इलाकों से आए प्रदर्शनकारियों ने इस विरोध प्रदर्शन में हिस्सा लिया। इस दौरान हुई विरोध सभा को ए.आई.डी.वाई.ओ. के राष्ट्रीय अध्यक्ष बी.आर.मंजूनाथ, ए.आई.एम.एस.एस. की महासचिव डॉ. एच.जी. जयालक्ष्मी, ए.आई.डी.एस.ओ. के दिल्ली राज्य अध्यक्ष भास्करानन्द, ए.आई.डी.वाई.ओ. की दिल्ली राज्य सचिव प्रकाश देवी, ए.आई.एम.एस.एस. की दिल्ली राज्य सचिव रितु कौशिक और ए.आई.डी.एस.ओ. के राज्य सचिव प्रशांत कुमार ने संबोधित किया।

सभा को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि यह बहुत ही दु:ख की बात है कि एक बर्बर से बर्बर बलात्कार और हत्या के आरोपी को जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड द्वारा मात्र तीन वर्ष की सजा दी गई

(शेष पृष्ठ 2 पर)

एआईडीएसओ का 8वां अखिल भारतीय छात्र सम्मेलन 26 से 29 अगस्त भोपाल में सम्पन्न

(विस्तृत रिपोर्ट अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी– स.स.दृ.)

मुम्बई की फोटो जर्नलिस्ट से सामूहिक बलात्कार के खिलाफ प्रदर्शन

धरने को सम्बोधित करती हुई कॉ. रितु कौशिक,

नई दिल्ली : मुम्बई में 22 वर्षीय फोटो जर्नलिस्ट से 22 अगस्त को हुए सामूहिक बलात्कार के खिलाफ ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (ऑल इण्डिया एमएसएस) की दिल्ली राज्य कमेटी द्वारा 26 अगस्त को जंतर मंतर पर विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनकारी महिलाएं मांग पट्टिकाएं लिये हुए थी और सरकार और पुलिस के निष्ठुर और उदासीन रवैये के विरोध में नारे लगाये। प्रदर्शनकारियों को सम्बोधित करते हुए संगठन की राज्य सचिव कॉ. रितु कौशिक, सीता सिंह, सुमन यादव, आशा रानी और एसयूसीआई(सी) की दिल्ली राज्य सचिवमण्डल सदस्य कॉ. प्राण शर्मा ने इस दरिन्दगी की घटना की कड़ी निन्दा की।

वक्ताओं ने कहा कि देश में महिलाओं व लड़कियों को सुरक्षा प्रदान करने के लम्बे-चौड़े वायदों के बावजूद महिलाओं के प्रति अपराध खतरनाक रेट से बढ़ते जा रहे हैं। यह और भी अफसोस की बात है कि जब लोग दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की मांग को लेकर इन घटनाओं के विरोध में प्रदर्शन करते हैं तो पुलिस उनके शिकवे-शिकायतों के प्रति हमदर्दी भरा रवैया अपनाने की बजाय उन पर लाठियों और आंसू गैस से हमला कर देती है। सरकार कानून-व्यवस्था को निहायत कम तरजीह देती है जिसके नतीजतन वे इलाके उपेक्षित रहते हैं। ऐसे अपराधों का इतना बोलबाला हो गया है कि स्कूल जाने वाली छोटी-छोटी बच्चियों को भी नहीं बख्शा जाता है। महिलाओं पर अत्याचार व बलात्कार आये दिन की बात हो गई है। एआईएमएसएस ने दोषियों को सख्त से सख्त सजा देने, दिल्ली के तमाम इलाकों में सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने की मांग की। संगठन ने महिलाओं व छात्राओं के लिए माहौल को और भी सुरक्षित बनाने के लिए शराब की खुली बिक्री पर रोक लगाने की मांग की और राजस्व बढ़ाने के चक्कर में शराब की बिक्री की नीति की निन्दा की। यौन शिक्षा देने, इलैक्ट्रोनिक व प्रिन्ट मीडिया के जरिये अश्लीलता व नारी देह की नंगी नुमाइश को बढ़ावा देने की सरकारी नीति की भी निन्दा की गई।

कॉ. प्राण शर्मा ने कहा कि सरकार महिलाओं व छात्राओं की इज्जत-आबरू की रक्षा करने और उन्हे सुरक्षा प्रदान करने में बुरी तरह विफल हो गई है। उन्होंने लोगों से अपील की कि समय का तकाजा समझें, संगठित हों और जन कमेटियों का निर्माण करें जिनको इतना सक्षम बनायें कि हर उम्र की महिलाओं व छात्राओं की इज्जत-आबरू की रक्षा की जा सके। बाद में माननीय गृह मंत्री के नाम एक ज्ञापन भी गृह मंत्रालय में अधिकारियों को सौंपा गया।

दिल्ली गैंग रेप के...

(पृष्ठ 1 का शेष)

है। 16 दिसम्बर को हुए जघन्य सामूहिक बलात्कार काण्ड ने पूरे देश को हिला कर रख दिया था, देशभर में जगह-जगह विरोध प्रदर्शन हुए थे और देश के तमाम छात्रों, नौजवानों और महिलाओं ने दोषियों को उदाहरणमूलक सजा देने की मांग की थी। लेकिन घटना के आठ महीने गुजर जाने के बाद एक आरोपी को सजा सुनाई गई और वह भी न के बराबर। वक्ताओं ने कहा कि यह फैसला दर्शाता है कि सरकार, पुलिस तथा प्रशासन द्वारा ऐसे जघन्य अपराध करने वालों को बढ़ावा दिया जा रहा है। वक्ताओं ने कहा कि किसी भी दोषी को उसकी उम्र देखकर नहीं बल्कि अपराध की जघन्यता को देखते हुए सजा दी जानी चाहिए। वर्तमान समाज में जबकि नैतिक-सांस्कृतिक पतन चरम पर पहुंच चुका है। शराबखोरी, नशाखोरी तथा अश्लीलता के प्रचार-प्रसार के कारण छात्र-नौजवान नैतिक पतन का शिकार हो रहे हैं। ऐसे समय में एक जघन्य अपराध के दोषी नाबालिग को उदाहरणमूलक सजा न देकर सरकार इस प्रकार की अपराधी मानसिकता को और भी बढ़ावा दे रही है।

वक्ताओं ने सरकार से मांग की कि किशोर अपराधी को तुरंत उदाहरणमूलक सजा दे ताकि वह दूसरे अपराधी मानसिकता रखने वालों के लिए एक सबक हो। इसके अलावा उन्होंने सरकार से मांग की कि छात्र-नौजवानों में बढ़ते नैतिक-सांस्कृतिक पतन को रोकने के लिए शराबखोरी और अश्लीलता के प्रचार-प्रसार पर रोक लगाए। वक्ताओं ने आम जनता, छात्रों, नौजवानों तथा महिलाओं से आह्वान किया कि वे महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार के खिलाफ एक जोरदार सामाजिक-सांस्कृतिक आंदोलन खड़ा करने के लिए आगे आएं।

दिल्ली गैंगरेप के किसी दोषी को बख्शा न जाए की मांग करते हुए भुवनेश्वर में 1 सितम्बर को एआईडीएसओ कार्यकर्ता

हजारीबाग जमीन अधिग्रहण मुद्दे पर
रांची में कन्वेन्शन

राँची (झारखण्ड): झारखण्ड राज्य बनने के बाद से ही विस्थापन इस राज्य की एक बड़ी समस्या के रूप में उभरकर सामने आई और समय बीतने के साथ-साथ राज्य की सत्तालोलुप राजनीतिक पार्टियाँ इस मुद्दे को अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेंकने के काम में उपयोग करने के उद्देश्य से और भी ज्वलंत बनाती गई। इस ज्वलंत समस्या की गम्भीरता को देखते हुए हमारी पार्टी एसयूसीआई(सी) पूरे राज्य भर में आन्दोलनरत रही है। इस आन्दोलन के क्रम में राँची में विस्थापन की समस्या के खिलाफ आन्दोलन को और तेज करने के उद्देश्य से हमारी पार्टी ने अन्य 36 पार्टियाँ, जो विस्थापन के खिलाफ आन्दोलन करने में प्रयासरत थी, उनको लेकर विस्थापन-विरोधी वननिर्माण मोर्चा गठित किया और विस्थापन के खिलाफ उनको और भी जुझारू बनाने का सिलसिला शुरू हुआ।

इसी क्रम में झारखण्ड राज्य के हजारीबाग जिले में स्थित पगार गाँव (केरेडरी) में ग्रामीणों की जमीन पर जबरन एनटीपीसी कम्पनी के साइट आफिस बनाए जाने का विरोध कर रहे ग्रामीणों पर पुलिस द्वारा अन्धाधुन्ध गोली चलाने और इस कारण दो ग्रामीणों की मौत और छः ग्रामीणों के घायल होने के विरोध में 8 अगसत को राँची के पुरूलिया रोड स्थित एक्सआईएसएस सभागार में विस्थापन विरोधी नवनिर्माण मोर्चा के बैनर तले एक दिवसीय कन्वेंशन का आयोजन किया गया। इससे पूर्व इस घटना के अगले दिन ही झारखण्ड साझा जनसंघर्ष अभियान जिसके घटक दलों में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के अलावा सीपीआई (एमएल), जनमुक्ति संघर्ष वाहिनी और समाजवादी जनपरिषद हैं, आदि के बैनर तले राँची में झारखण्ड के मुख्यमंत्री का पुतला दहन किया गया था और इस कार्यक्रम के पश्चात हमारे एक प्रतिनिधिमण्डल घटनास्थल पर जाकर वहाँ के आन्दोलनकारियों से मिला और मौके का मुआयना किया। इस प्रतिनिधिमण्डल में एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के राँची जिला सचिव कॉमरेड सिद्धेश्वर सिंह भी उपस्थित थे।

उपर्युक्त कन्वेंशन में हजारीबाग के पगार गाँव में एनटीपीसी के साइट आफिस बनाने हेतु अपनी जमीन जबरन छीने जाने का विरोध कर रहे निर्दोष ग्रामीणों पर पुलिस द्वारा अंधाधुंध फायरिंग की घटना की निन्दा की गई और कहा गया कि यह घटना इस बात का सबूत है कि सरकार और पुलिस प्रशासन दोनों ही हर प्रकार से सिर्फ बड़े-बड़े कम्पनियों और पूँजीपतियों की ही दलाली का काम कर रहे हैं और पूँजीपतियों के हित में ग्रामीणें की जमीन बिना किसी बातचीत के जबरन छीनकर बिना किसी मुआवजे के उन्हें बेघर करने का काम कर रहे हैं। झारखण्ड में जो एक के बाद एक सरकार बनी उन सभी ने झारखण्डी जनता के कल्याण की बात कह कर असल में बड़े-बड़े कॉरपोरेट घरानों और कम्पनियों की ही सेवा की है और जनता पर दमन, उत्पीड़न, शोषण व अत्याचार को और भी अधिक तीव्र किया है। हेमंत सोरेन की सरकार भी यही काम कर रही है। अंततः कन्वेंशन के दौरान जनता से अपील भी की गई कि जिस सरकार का जन्म हार्स ट्रेडिंग व भ्रष्टाचार के माध्यम से हो रहा है उससे हमें जनहित करने किसी भी प्रकार की उम्मीद न रखकर अपनी खुद की ताकत के बलबूते पर जनजीवन के ज्वलंत सवालों को लेकर जनकमेटी का निर्माण करके व्यापक जनान्दोलन खड़ा करना होगा।

कन्वेंशन के दौरान सरकार से मांग की गई कि ग्रामीणें की जमीन जबरन हथियाना फौरन बन्द कर एनटीपीसी आफिस के निर्माण कार्य को रोक दिया जाए। ग्रामीणों पर फायरिंग करने वाले पुलिस अधिकारी को अविलम्ब निलम्बित कर उसे सख्त सजा दी जाए। एनटीपीसी के ठेकेदार के पुत्र को ग्रामीणों पर हमला करने के आरोप में फौरन हिरासत में लिया जाए। पुलिस हमले में मारे गए ग्रामीणों के परिवार को उचित मुआवजा देकर उन परिवारों के एक-एक सदस्य को एनटीपीसी में ही नौकरी दी जाए। हमले में घायल हुए ग्रामीणों के इलाज और मुआवजे का उचित इन्तजाम किया जाए।

पार्टी को मजबूत करें, कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों को देश भर में फैला दें, क्रान्ति सफल करने के लिए नई उच्च सर्वहारा संस्कृति पर आधारित संघर्ष में जनता को संगठित करें

(बैंगलौर में 5अगस्त को हुई सभा में एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती द्वारा दिया गया भाषण)

कॉमरेड अध्यक्ष, मंच पर मौजूद राज्य कमेटी सदस्यों व कॉमरेडो!

आप सभी जानते हैं कि 5 अगस्त हमारे लिए कितना भावनात्मक दिन है। 1976 में इसी दिन हमारे प्रिय नेता, शिक्षक, पथ प्रदर्शक, हमारे देश की इस महान क्रान्तिकारी पार्टी के संस्थापक और इस युग के एक अन्यतम मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष का निधन हो गया था। तब से यह दिन हम देश भर में मनाते आये हैं। इस दिन हमारे नेता, कार्यकर्ता, समर्थक, हमदर्द और शुभचिन्तक सभी उनके जीवन-संघर्ष व उनके विचारों को याद करने के लिए इकठ्ठा होते हैं। वे अपने जीवन-संघर्ष की वजह से महान हैं जिसके माध्यम से महान विचारों का आविर्भाव हुआ। कोई भी महान चिन्तन महान संघर्ष की उपज होता है। जीवन में उन्होंने जो संघर्ष संचालित किया वह एक महान संघर्ष, एक ऐतिहासिक संघर्ष था जिसने ऐसे एक चिन्तन को पैदा किया जो केवल हमारे देश के ही नहीं बल्कि दुनिया के मजदूर वर्ग के क्रान्तिकारी संघर्षों का मार्गदर्शन कर रहा है। कॉमरेड घोष के इन राह रोशन करने वाले विचारों को हमें गहराई से समझना होगा। असल में चिन्तन ही मनुष्य और समाज की शक्ति है। इसी की वजह से मानव समाज तमाम दूसरे पशुजगत से भिन्न है। जब यह चिन्तन महान, उच्च, ऐतिहासिक होता है तब यह विकास की उच्चतर अवस्थाओं को हासिल करने के लिए समाजिक आन्दोलन को दिशानिर्देशित करता है। लेकिन जब यह छिछला होता है, एक गलत दिशा में चला जाता है तब समाज का नुकसान करता है और वह नीचे गिर जाता है। इसलिए हमें उनके चिन्तन को समझना है और अपने जीवन में अमल में लाना है। उनके चिन्तन और शिक्षाओं के आधार पर हमें अपने जीवन-संघर्ष को संचालित करना है। आज हम उनका स्मृति दिवस ऐसे समय मना रहे हैं जब हमारा समाज गहरे संकट में है। जीवन दयनीय, दमघोंटू और असहनीय हो गया है। लोग संघर्ष के सही रास्ते की तलाश में हैं। लोग बदलाव चाहते हैं। लेकिन वह बदलाव केवल तभी आ सकता है जब दो अति महत्वपूर्ण शर्तें पूरी हो जाएं, एक है संघर्ष का सही रास्ता और दूसरी है संघर्ष का हथियार। सिर्फ रास्ता जानने से ही कोई समाज को बदल नहीं सकता है। इसके लिए संघर्ष के हथियार की जरूरत होती है और वह हथियार है पार्टी। इसी वजह से इतिहास में आप पायेंगे कि सभी महान मार्क्सवादी चिन्तनकारों ने न केवल क्रान्ति का सही रास्ता दिखाया बल्कि साथ ही साथ क्रान्तिकारी सिद्धांत को व्यवहार में उतारने के लिए एक पार्टी का भी निर्माण किया। इसी वजह से लेनिन इस नतीजे पर पहुँचे और यह बिल्कुल सही है कि एक क्रान्तिकारी पार्टी के बिना क्रान्ति नहीं होगी। यह आकलन कितना सही और ऐतिहासिक है रूसी क्रान्ति ने यह साबित कर दिया था। जब एक क्रान्तिकारी विचार और नेतृत्व के साथ एक क्रान्तिकारी पार्टी मौजूद थी तभी क्रान्ति सम्पन्न हुई और शोषण-दमन से मुक्त समाजवादी समाज का निर्माण हुआ जो बहुत ही उच्च स्तर तक विकसित हुआ। लेकिन जब क्रान्तिकारी नेतृत्व नहीं रहा और संशोधनवादियों ने पार्टी का नेतृत्व हथिया लिया तो पार्टी ने संघर्ष का रास्ता छोड़ दिया और मार्क्सवाद-लेनिनवाद से भटक गई। जब पार्टी ही गैर कम्युनिस्ट हो गई तो क्रान्ति भी असफल हो गई। अत: इससे हमें क्या सबक मिलता है? यही कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद इतना ताकतवर है कि यह आपको सही रास्ता दिखा सकता है और एक सही क्रान्तिकारी संगठन बनाने में मदद करता है जिसके जरिये ही क्रान्ति सफल होती है। जब ये दोनों चीजें फेल हो जाती हैं तो क्रान्ति भटक जाती है। कॉमरेड शिवदास घोष ने ये दोनों ही हमें दी हैं, एक तो क्रान्तिकारी सिद्धांत यानी जीवन के तमाम पहलुओं को समेटे हुए एक समग्र चिन्तन और दूसरी दी है क्रान्तिकारी पार्टी जो हमारे समाज में आमूलचूल बदलाव ला सकती है जिसकी आज जरूरत है। कोई भी तार्किक तौर पर पूछ सकता है कि जब क्रान्तिकारी सिद्धांत और क्रान्तिकारी पार्टी, दोनों ही हमारे पास हैं तब क्रान्ति क्यों नहीं हो रही है? इसका जवाब स्टालिन ने दिया है। उन्होंने कहा था, ''ऐसे भी क्षण आते हैं जब परिस्थिति क्रान्तिकारी है, जब बुर्जुआ वर्ग का शासन जड़ों तक हिल गया होता है और तब भी क्रान्ति फतह नहीं हो पाती है क्योंकि जनता को नेतृत्व प्रदान करने और सत्ता दखल करने के लिए पर्याप्त शक्ति और साख लिए हुए सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी पार्टी नहीं है।'' इसी तर्ज पर कॉमरेड शिवदास घोष ने कहा, ''मजदूर-किसानों और तमाम शोषित-पीड़ित जनता के विक्षोभ के चलते लहरों पर लहर के रूप में क्रान्ति बार-बार आगे बढ़ने का प्रयास करेगी। लहरों पर लहर के तौर पर यह फूट पड़ने की कोशिश करेगी... (लेकिन) क्रान्ति तब तक नहीं होगी जब जक कि क्रान्ति का नेतृत्व करने लायक क्षमता सहित मजदूर वर्ग की शक्तिशाली क्रान्तिकारी पार्टी का आविर्भाव नहीं हो जाता।'' इसलिए क्रान्ति की खातिर पार्टी का ताकतवर होना जरूरी है। सिर्फ पार्टी का होना ही काफी नहीं है। फिर पार्टी के बिना भी क्रान्ति नहीं होगी। इसका मायने है कि पार्टी इतनी शक्तिशाली होनी चाहिए कि शासक पूँजीपति वर्ग के ताकतवर संगठन राजसत्ता को उखाड़ फेंकने में सक्षम हो। लेनिन ने दिखाया था कि आधुनिक पूँजीवादी राजसत्ता फौज-पुलिस, सिविल प्रशासन और न्यायपालिका जैसे स्थाई अंगों से मिल कर बनी है। ऐसी एक ताकतवर राजसत्ता जो सिर से पांव तक शस्त्रों से लैस है उसे उखाड़ना होगा, आप अंदाजा लगा सकते हैं कि इसके लिए कितनी ताकतवर पार्टी की जरूरत है। क्रान्ति से पहले सर्वहारा के पास संघर्ष का केवल एक ही हथियार होता है वह है पार्टी। इसी के जरिये उसे राजसत्ता के बहुत शक्तिशाली अंगों, बुर्जुआ वर्ग की फौज, इसके प्रशासन, इसकी न्याय व्यवस्था, इसकी पुलिस की चुनौतियों का मुकाबला करना पड़ता है। अत: कॉमरेडो, जो कोई भी क्रान्ति चाहता है उसे पार्टी को मजबूत करना होगा। जब तक पार्टी ऐसी क्षमता और शक्ति और प्रतिष्ठा प्राप्त नहीं कर लेती और लोगों का भरोसा हासिल नहीं कर लेती है, तब तक क्रांति नहीं हो सकती। इसलिए हमारे सामने जो कार्यभार है उसे समझना होगा। यह कार्यभार है पार्टी को मजबूत करना, क्रान्तिकारी विचार को फैलाना, लोगों के विचारों को बदल देना। क्रान्ति पहले चिन्तन के क्षेत्र में होती हैं। इसे हम सांस्कृतिक क्रान्ति कहते हैं। कॉमरेड शिवदास घोष ने इस पर बहुत जोर दिया है। पुरानी संस्कृति को बदले बिना आप नये समाज का निर्माण नहीं कर सकते हैं। पुरानी संस्कृति जो ऐतिहासिक तौर पर निशेषित हो गई है उसे त्यागना होगा और एक नई संस्कृति हासिल करनी होगी जो है सर्वहारा वर्ग की संस्कृति, सर्वहारा वर्ग की क्रान्तिकारी संस्कृति। हमें गहराई से समझना होगा कि सर्वहारा वर्ग की संस्कृति सामूहिकतावाद और सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयतावाद का समन्वय है। आज केवल यही संस्कृति ऊपर उठाती है और आदमी के मन को मुक्त करती है। जब मैं सिर्फ मेरे अपने देश के ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया के मेहनतकशों को प्यार करता हूँ और जब मैं वास्तव में ही यकीन करता हूँ कि किसी भी देश के मजदूर मेरे अपने वर्ग से ही सम्बन्धित हैं, तब मैं जातिवाद, साम्प्रदायिकता, इलाकापरस्ती, क्षेत्रीय कट्टरता और राष्ट्रीय अंधोन्माद से ऊपर उठ जाता हूँ। मैं विशाल हृदय बन जाता हूँ। यही है कम्युनिस्टों की संसकृति, क्रान्तिकारी सर्वहारा की संस्कृति।

लेकिन आज हम क्या देखते हैं? यहाँ तक कि मजदूर वर्ग और अन्य शोषित जनता भी सामंती संस्कृति के प्रभाव में है और तमाम तरह की फूटपरस्त प्रवृतियों की शिकार है। हमारे देश के आजादी आन्दोलन के इतिहास का विश्लेषण करते हुए लेनिन की शिक्षा के आधार पर कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्ति के इस युग में वर्ग के तौर पर पूँजीपति वर्ग अन्तरराष्ट्रीय तौर पर प्रतिक्रियावादी हो गया है, इसलिए यह हमारे आजादी आन्दोलन में क्रान्तिकारी भूमिका नहीं निभा सका। बल्कि सर्वहारा क्रान्ति की अपनी भयग्रंथी की वजह से इसने सामंतवाद के साथ समझौता किया, खास कर संस्कृति के क्षेत्र में। फलस्वरूप तमाम पिछड़े सामंती विचारों, रीति-रिवाजों, अंधविश्वासों, कुसंस्कारों, पूर्वाग्रहों के साथ-साथ तमाम तरह के फूटपरस्त रुझान जैसे जातिवाद, साम्प्रदायिकता, इलाकापरस्ती, प्रादेशिकतावाद आदि हमारे सामाजिक चिन्तन में रह गये और अब दूषित बुर्जुआ व्यक्तिवाद भी इनमें जुड़ गया है।

इतिहास में सामंती समाज की तमाम विकेन्द्रित अर्थव्यवस्थाओं को एक एकल राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में एकीकृत करने के जरिये पूँजीवाद विकसित हुआ था और उसी के आधार पर एक केन्द्रीकृत राष्ट्रीय राजसत्ता का निर्माण किया था। तत्कालीन सामाजिक जीवन के तमाम क्षेत्रों में सामंतवाद का मुकाबला किये बिना यह हो नहीं सकता था। इसने महिलाओं को मुक्त किया जो पूरी तरह पराधीन थी। इसने भूदासों को मुक्त किया जो जमीन से बंधे हुए अर्धदास थे। इसने धर्म और चर्च के चंगुल से शिक्षा को मुक्त किया और इसे वैज्ञानिक, धर्मनिरपेक्ष और जनवादी बनाया। कितना महान संघर्ष था वह! इसने एक नई सभ्यता पैदा की। मार्क्स ने दिखाया है कि चाहे प्रकृति में हो या समाज में, जो कुछ भी अस्तित्व में आता है, अपने विकास के क्रम में उसका अस्तित्व खत्म होगा ही। जब यह आता है तब प्रगतिशील, क्रान्तिकारी बना रहता है। लेकिन उसका विकास अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच जाने के साथ ही उसका ह्रास शुरू हो जाता है और मरणासन्न हो जाता है और अंतत: उसका अस्तित्व ही मिट जाता है। प्रकृति में यह स्वत:स्फूर्त ढंग से होता है लेकिन समाज में ऐसे नहीं होता है। इसमें चेतना एक भूमिका निभाती है। जैसे हम क्रान्ति के अनुकूल परिस्थिति तैयार करने का प्रयास कर रहे हैं, सत्तासीन शासक वर्ग प्रतिकूल परिस्थिति तैयार करने का प्रयास कर रहा है। यह संघर्ष तय करता है कि अंतत: अंजाम क्या होगा। इतिहास दिखाता है कि क्रान्तिकारी वर्ग या वर्गों ने हमेशा ही पुराने प्रतिक्रियावादी शासक वर्ग को परास्त किया है। लेकिन ऐसी एक क्रान्ति पुराने और अप्रचलित विचारों, रीति-रिवाजों, आदतों के खिलाफ लड़ कर और लोगों को उच्च संस्कृति, नीति-नैतिकता से लैस करके ही सफल की जा सकती है। केवल इस प्रक्रिया से ही क्रान्तिकारी परिस्थिति पैदा होती है और क्रान्ति होती है। एक समय पूँजीवाद प्रगतिशील था; निस्संदेह यह क्रान्तिकारी था जब यह अपने उदयकाल के दौरान सामंतवाद के खिलाफ लड़ा था। लेकिन अपने विकास के सर्वोच्च स्तर यानी साम्राज्यवाद में पहुँच कर यह प्रतिक्रियावादी और मरणासन्न हो गया। जैसा कि लेनिन ने दिखाया यह 100 साल से ज्यादा अर्सा पहले 1903-04 या ज्यादा हुआ तो 1905 तक मरणासन्न हो गया था। हमारे देश में बुर्जुआ जनवादी क्रान्ति या जिसे हम स्वतंत्रता संग्राम कहते हैं वह शुरू हुआ जब पूँजीवाद पहले ही साम्राज्यवादी अवस्था में पहुँच चुका था। स्वतंत्रता संग्राम न केवल ब्रिटिश साम्राज्यवाद बल्कि सामंतवाद के खिलाफ भी संघर्ष था। उस संघर्ष का नेतृत्व हमारे देश के पूँजीपति वर्ग द्वारा किया गया था जो एक वर्ग के रूप में अन्तरराष्ट्रीय तौर पर पहले ही प्रतिक्रियावादी हो चुका था। खैर, जो भी हो, हमारे देश में पूँजीपतियों की सापेक्ष प्रगतिशील भूमिका थी चूँकि यह विदेशी साम्राज्यवाद और स्थानीय सामंतवाद के खिलाफ लड़ा था। लेकिन क्योंकि पूँजीपति वर्ग सर्वहारा क्रान्ति से डरता था जो पहले ही 1917 में रूस में हो चुकी थी। इसने एक तरफ ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों के साथ समझौता किया और दूसरी तरफ खास कर संस्कृति के क्षेत्र में सामंतवाद से समझौता किया। इसलिए सत्ता पर काबिज होने से पहले तमाम सामंती विचारों, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, प्रादेशिकता व इलाकापरस्ती के खिलाफ सांस्कृतिक आन्दोलन निहायत जरूरी था लेकिन पूँजीपति वर्ग ने तमाम ऐसी चीजों के साथ समझौता किया। उन्होंने सांस्कृतिक क्रान्ति के झण्डे को फेंक दिया। सांस्कृतिक आन्दोलन को तिलांजली दे दी। उन्होंने छुआछूत के खिलाफ यहाँ-वहाँ कुछ संघर्ष, तथाकथित जनवादी अधिकारों, व्यक्ति-स्वतंत्रता की तमाम ऐसी बातें की लेकिन उन्होंने व्यापक संघर्ष नहीं छेड़ा। वे तमाम फूटपरस्त विचार और प्रवृतियाँ समाज में रह गई। आजादी के बाद सत्तासीन होने के बाद और असमाधेय संकट से रूबरू होने पर जिसकी गिरफ्त में हमारी अर्थव्यवस्था बिल्कुल शुरूआत से ही थी, यही पूँजीपति वर्ग मजदूर वर्ग और अन्य शोषित लोगों में फूट डालने के लिए तमाम फूटपरस्त रुझानों, प्रवृतियों को भड़का और उकसा रहा है। सिर्फ इतना ही नहीं, चूँकि वह वैज्ञानिक और तार्किक चिन्तन से डरता है इसलिए राष्ट्रीय व क्षेत्रीय तमाम बुर्जुआ पार्टियाँ आज रूढ़िवादी और अंधविश्वासी

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉ. कृष्ण चक्रवर्ती का भाषण...

(पृष्ठ 3 का शेष)

चिन्तन को बढ़ावा दे रही हैं। वे शिक्षा को भी इसी तरह पैटर्न कर रही हैं जिससे कि छात्रों में कोई वैज्ञानिक सोच-समझ पैदा न हो सके चाहे वे विज्ञानों में उच्चतम शिक्षा पूरी कर चुके हों। बुर्जुआ पार्टियाँ अपने संकीर्ण चुनावी फायदों के लिए साम्प्रदायिकता, जातपात, इलाकापरस्ती और भाषाई कट्टरता को बढ़ावा दे रही हैं। बड़ी राष्ट्रीय बुर्जुआ पार्टियों में से एक, बीजेपी हिन्दू वोट बैंक तैयार करने के एकमात्र उद्देश्य से रथ यात्राओं, बाबरी मस्जिद के ध्वंस, मुम्बई-भिवण्डी में साम्प्रदायिक दंगे करवा कर और आखिरकार गुजरात में नरसंहार जैसे कुकृत्यों के जरिये लोगों में साम्प्रदायिक उन्माद भड़का रही है जबकि पूँजीपति वर्ग की सबसे भरोसेमंद कांग्रेस भी बीजेपी की चालों का मुकाबला करने के लिए कभी साम्प्रदायिकता और कभी संकीर्णता को भड़का रही है। तुच्छ चुनावी फायदों के लिए डीएमके, एआईएडीएमके, टीडीपी, बीएसपी, आरजेडी, बीजेडी आदि तमाम क्षेत्रीय बुर्जुआ पार्टियाँ जातिवाद, नस्लवाद या भाषाई कट्टरता को भड़का रही हैं।

फिलहाल हम क्या देख रहे हैं? बीजेपी ने नरेन्द्र मोदी को सामने लाकर बड़ी चालाकी से साम्प्रदायिक एजेण्डा लागू कर दिया है इस उम्मीद के साथ कि वह सत्ता में आ जाएगी जैसा कि यह बाबरी मस्जिद के ध्वंस के बाद कर सकी थी। जबकि तेलंगाना को राज्य का दर्जा देकर कांग्रेस ने देश भर में क्षेत्रीय कट्टरता को उकसा दिया है। इसने गोरखालैण्ड, बोडोलैण्ड, विदर्भ आदि अलग राज्यों की मांग को हवा दी है। इन सब ने मिल कर पूरे देश में कट्टरता का माहौल पैदा कर दिया है जिसमें महंगाई, बेरोजगारी, शिक्षा-स्वास्थ्य सेवाओं की समस्याएं, सांस्कृतिक अधोपतन, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध जैसी लोगों की असल समस्याओं को भुला दिया है। इससे किसको फायदा हो रहा है? आइये तेलंगाना मुद्दे से इसे देखें।

ये पार्टियाँ इन तमाम फूटपरस्त प्रवृतियों को भड़का रही हैं क्योंकि पूँजीपति वर्ग चाहता है कि लोग में फूट पड़ जाए। लोग आपस में लड़ते रहें। इसलिए आप देखते हैं कि समान भाषाभाषी लोगों का एक तबका अलग तेलंगाना राज्य के लिए लड़ रहा है! तर्क क्या है? ''हम पिछड़े हुए हैं, हमारे क्षेत्र में कोई विकास नहीं हुआ है'', यह सच है। लेकिन कोई विकास क्यों नहीं हुआ? क्या इसकी वजह यह है कि हम एक अलग राज्य नहीं हैं? असल में पिछड़ापन तो पूँजीवादी व्यवस्था की वजह से है। पूरे देश को बांट कर और छोटे-छोटे राज्य बना कर क्या विकास हो जाएगा? झारखण्ड में जाइये तो आप देख सकते हैं कि इसके बनने के बाद क्या इसका विकास हुआ? लोगों, खास कर मेहनतकश लोगों की हालत और भी बदतर हो गई है। बिहार एक बड़ा राज्य था, बहुत बड़ा राज्य था, इसमें दोनों चीजें थी, जो हिस्सा झारखण्ड बन गया है वह खनिजों से भरपूर है। इस क्षेत्र में आपको हर तरह के खनिज मिल जाएंगे। वहाँ बहुत ऊंचे दर्जे का औद्योगिक विकास हो सकता है मगर तभी हो सकता है जब पूँजीवाद नहीं रहे, समाजवाद हो। समाजवाद रहने पर देखियेगा वहाँ कितनी तेजी से विकास होगा। दूसरी तरफ जिसे आज बिहार कहा जाता है वहाँ गंगा जैसी नदी बहती है। वहाँ कृषियोग्य विशाल भूमि है। कितना सुन्दर राज्य था यह! अगर यह संयुक्त रहता और विकास करता तो कितना शानदार राज्य हो सकता था लेकिन इसके विकास के लिए प्रयास बुर्जुआ पार्टियों ने कभी किया ही नहीं। लेकिन इसे दो टुकड़ों में बांट दिया गया। खनिजों से भरपूर इस हिस्से झारखण्ड के बारे में मान लिया गया था कि बंटवारे के बाद औद्योगिक रूप से विकास करेगा। लेकिन आप एक भी बड़े उद्योग का नाम नहीं बता सकते जो बंटवारे के बाद वहाँ लगा हो। न्यूनतम ज्ञान रखने वाला अर्थशास्त्र का कोई भी छात्र इस मामूली सी बात को समझ सकता है कि जहाँ कोई बाजार नहीं हो वहाँ उद्योग विकसित नहीं हो सकते और यह समझना भी बहुत आसान है कि एक राज्य को बांटने से बाजार पैदा नहीं हो जाता है। अगर ऐसा होता तो एक के बाद दूसरे राज्य को बांट कर पूँजीपतियों ने अपने बाजार संकट को हल कर लिया होता। नये छोटे राज्य के बनाने से साथ ही साथ बाजार पैदा नहीं हो जाता है। चालाक राजनीतिज्ञ महज लोगों को गुमराह करने के लिए, लोगों को भ्रमित करने के लिए इसका प्रचार किया करते हैं। दरअसल, अगर बाजार हो तो पूँजीपति खुद-ब-खुद पूँजीनिवेश करेंगे, चाहे राज्य छोटा हो या बड़ा क्योंकि इसके छोटे-बड़े होने से पूँजीपतियों को कोई फर्क नहीं पड़ता है। तब कौन है जो छोटा राज्य चाहता है? छोटे राज्य की एक विधान सभा होगी, विधान सभा में एक स्पीकर और एक डिप्टी स्पीकर होगा, एक मुख्यमंत्री और उप मुख्यमंत्री होगा, गृहमंत्री, कानून मंत्री, शिक्षा मंत्री, यह मंत्री, वह मंत्री, क्या-क्या नहीं होगा। हाई कोर्ट होगी, मुख्य न्यायाधीश और न्यायाधीश होंगे, फिर डीआईजी, आईजी होंगे, इसके अलावा मुख्य सचिव और मंत्रालयों के अन्य सचिव होंगे। यह सर्कल और अवसरवादी नेतागण अलग राज्य चाहते हैं और अपनी जरूरतों को लोगों के साथ साझी जरूरत बना देते हैं। लेकिन एक छोटा राज्य बनने से लोगों का कभी कोई भला नहीं होता है। उल्टे, लोगों को अब इस भारी भरकम प्रशासन का बोझ भी अपने कंधों पर वहन करना पड़ेगा। जनजीवन की असल समस्याएं जैसे महंगाई, बेरोगारी, शिक्षा-स्वास्थ्य सेवाएं आदि पहले की तरह ही अनसुलझी रह जाती है। बल्कि ये और भी घनघोर हो उठती हैं। फिर इससे फायदा किसका हुआ? पूँजीपतियों का, शासक वर्ग का।

पूँजीवाद आज गहन संकट में है। इसके अलावा आपने देखा कि किस तरह 2008 की मंदी ने पूरी पूँजीवादी दुनिया को इसकी जड़ों तक हिला कर रख दिया था। संकट का सारा बोझ दुनिया के मेहनतकश अवाम पर लाद दिया गया है। सभी पूँजीवादी देशों के लोगों का जीना दूभर को गया है। पूँजीवादी शोषण-दमन के खिलाफ हर जगह लोगों के स्वत:स्फूर्त आन्दोलन फूट पड़ रहे हैं। हमारा देश भी इसका अपवाद नहीं है। सर्वहारा क्रान्ति की अपनी भयग्रंथी के चलते शासक वर्ग लोगों को बांटने की कोशिश कर रहा है। फूटपरस्त रुझानों, प्रवृतियों को उकसा कर लोगों के एक तबके को दूसरे के खिलाफ खड़ा कर रहा है ताकि वे एकजुट न हो सकें और पूँजीवाद के खिलाफ एकजुट संघर्ष गठित न हो सके। यही वजह है कि कांग्रेस, बीजेपी आदि बुर्जुआ पार्टियाँ न केवल चुनावी लाभ बटोरने के लिए, बल्कि लोगों को बांट कर और गुमराह कर पूँजीवाद का हित साधने के लिए फूटपरस्त रुझानों, प्रवृतियों को भड़का रही हैं। जिन हालात से हम आज रूबरू हैं वे ऐसे हैं। लोगों की एकता का तोड़ा जाना एक गंभीर समस्या है लेकिन इससे कहीं ज्यादा गंभीर है कट्टरता जो जातिवाद, साम्प्रदायिकता, संकीर्णतावाद, क्षेत्रवाद, भाषाई कट्टरता आदि इन तमाम फूटपरस्त रुझानों, प्रवृतियों को केन्द्र करके सामाजिक मानसिकता में पनप रही है। क्योंकि जब कट्टरता बढ़ती है तो तर्क और तर्कसंगत मन मर जाता है। अंतत: मानवीय मूल्यबोध मर जाते हैं। यह फासीवाद के पनपने की उपजाऊ जमीन तैयार कर देता है। कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया था कि अगर फासीवाद आ जाता है तो कुछ ही लोग बचेंगे जिन्हें इन्सान कहा जा सकता है। फासीवाद इन्सान और इन्सानियत के विकास की प्रक्रिया को ही बाधित कर देता है। इन सब चीजों का मुकाबला किये बिना आप कैसे क्रान्ति, एक नई सभ्यता, जीवन की नई धारणा लेकर एक नये समाज का निर्माण कर सकते हैं? इसके लिए जरूरी है उन्नततर संस्कृति और उच्चतर नैतिक मूल्यों पर आधारित एक सशक्त सामाजिक-सांस्कृतिक आन्दोलन जो मौजूदा संस्कृति से गुणात्मक रूप से उन्नततर होगी—जिसे हम सर्वहारा संस्कृति कहते हैं जैसा कि मैंने पहले ही कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन से दिखाया है। हमारी पार्टी के सिवा और कोई भी पार्टी इसके लिए कोशिश नहीं कर रही है। तथाकथित कम्युनिस्ट पार्टियाँ सीपीआई(एम), सीपीआई और नक्सलवादी सभी मार्क्सवाद की बात करती हैं लेकिन वे खुद भी जातिवाद, संकीर्णतावाद, इलाकापरस्ती और तमाम तरह की फूटपरस्त प्रवृतियों को भड़का रही हैं। बहुत सी जगह आप पायेंगे कि नक्सलवादी ग्रुपों में से कुछ जातिवादी पार्टियाँ हैं। वे तथाकथित निम्न जातियों के तुष्टीकरण के जरिये क्रान्ति को कामयाब करने की सोच रही हैं। क्योंकि अनुसूचित जातियों के बहुसंख्यक लोग मजदूर वर्ग से ताल्लुक रखते हैं इसलिए वे सोच रही हैं कि उनके जाति संघर्ष को समर्थन देने में कुछ गलत नहीं है। लोगों को जाति संघर्ष में उलझा कर जातिवाद को खत्म नहीं किया जा सकता है, उल्टे यह और भी बढ़ेगा। यही सब कुछ आज हमारे देश में हो रहा है। जो सचमुच ही मेहनतकश लोगों से प्यार करते हैं जैसा कि कॉमरेड शिवदास घोष ने दिखाया है, उन्हें वर्ग दृष्टिकोण से उनको शिक्षित करना चाहिए। उनको सर्वहारा क्रान्तिकारी संस्कृति से लैस करना चाहिए। केवल इसी रास्ते से मजदूर वर्ग और अन्य शोषित जनता को एक दिन तमाम तरह के शोषण-उत्पीड़न से मुक्ति दिलाई जा सकती है।

चिन्तन के क्षेत्र में फासीवादी हालात जो हमारे समाज में पैदा हो रहे हैं यह एक खतरनाक रुझान है। इसका मुकाबला किये बिना क्रान्ति की बात तो दूर रही, जनवादी आन्दोलन तक विकसित नहीं किया जा सकता है। लेकिन कॉमरेडो, इससे विचलित होने की कोई बात नहीं है। जहाँ एक तरफ यह रुझान बढ़ रहा है, वहीं दूसरी तरफ लोगों में आन्दोलन के लिए आग्रह भी जबरदस्त बढ़ रहा है। जीवन के सभी क्षेत्रों में पूँजीवादी संकट ने जनजीवन को दयनीय, असहनीय और दमघोंटू बना दिया है। लोग आन्दोलन चाहते हैं और लोगों की यह अभिलाषा समय-समय पर स्वत:स्फूर्त आन्दोलनों में अभिव्यक्त हो रही है जैसा कि अन्ना हजारे आन्दोलन या दिल्ली में गैंग रेप के खिलाफ आन्दोलन में हमने देखा। ये सिर्फ भ्रष्टाचार और बलात्कार के खिलाफ ही आन्दोलन नहीं थे बल्कि पूँजीवाद द्वारा पैदा की जा रही जनजीवन की ज्वलंत समस्याओं के खिलाफ संचित आक्रोश का विस्फोट थे। लोग वास्तव में ही समाज का आमूलचूल परिवर्तन चाहते हैं। हमारा देश क्रान्ति के लिए पुकार रहा है। समाज क्रान्ति के लिए गुहार लगा रहा है। लेकिन लोग नहीं जानते कि क्रान्ति क्या है। वे नहीं जानते कि किसके खिलाफ और किस के लिए तथा किसके द्वारा क्रान्ति होगी। अगर क्रान्ति को सही-सही समझा जाए तो इसका मायना है पुराने समाज का—इसकी अर्थव्यवस्था, इसकी राजनीति और संस्थानों का, इसकी जीवन की धारणाओं का, इसकी संस्कृति का, इसके सोचने के ढंग का, इसकी आदतों, और रीति-रिवाज का—सभी कुछ का सम्पूर्ण और आमूलचूल परिवर्तन। जीवन को ही बदल डालना होगा। जब तक समाज के आदमी बदल न जाएं, उनकी संस्कृति, उनकी आदतें, उनके व्यवहार, उनके विचार, उनके सोचने का ढंग—सभी कुद बदल न जाए तब तक कैसे पुराने सोच-विचार और चिन्तन-व्यवहार में जी रहे उसी पुराने समाज से नये समाज का आविर्भाव होगा? ऐसा चमत्कार कभी नहीं होता है और होगा भी नहीं।

ऐसा क्रान्तिकारी परिवर्तन एक ऐसी क्रान्तिकारी पार्टी के जरिये ही किया जा सकता है जिसके पास क्रान्तिकारी सिद्धांत और क्रान्तिकारी संस्कृति है जो इस देश में हमारी पार्टी सोशलिस्ट यूनिटी सैण्टर ऑफ इण्डिया(कम्युनिस्ट) है। अन्य कई मूल्यवान योगदानों के अलावा ये दो योगदान—क्रान्तिकारी सिद्धांत और क्रान्तिकारी पार्टी—कॉमरेड शिवदास घोष के महान योगदान हैं। अत: कॉमरेडो, आज इस पार्टी को मजबूत करने, कॉमरेड शिवदास घोष के चिन्तन को देश के कोने-कोने में पहुँचा देने की जिम्मेदारी हम पर आ गई है। आज कांग्रेस, बीजेपी आदि तमाम बुर्जुआ पार्टियों ने लोगों का भरोसा खो दिया है। असल में लोग उनसे और उनके नेताओं से नफरत करते हैं। सीपीआई(एम), सीपीआई जैसी वामपंथी पार्टियाँ भी बेनकाब होती जा रही हैं। लेकिन जहाँ कहीं भी हमारी पार्टी काम कर रही है वहीं लोग अधिकाधिक संख्या में इसकी ओर आकर्षित हो रहे हैं। केवल हमारी पार्टी ही उनके जीवन के ज्वलंत मुद्दों पर जनआन्दोलन गठित कर रही है। इसलिए कॉमरेडो, हमारे विकास के लिए यह शानदार परिस्थिति है। कॉमरेड शिवदास घोष के विचार के फैलने के साथ जब लाखों, करोड़ों लोग पार्टी की ओर आकर्षित होंगे और अपनी खुद की संघर्ष कमेटियों में संगठित होंगे और इस तरह पार्टी के नेतृत्व के तहत लोगों की राजनैतिक शक्ति का निर्माण करेंगे, तब क्रान्ति की परिस्थिति तैयार हो जाएगी, क्रान्ति निश्चित ही विजयी होगी।

इसलिए आइये इस अवसर पर हम सभी शपथ लें कि हम अपने जीवन में संघर्ष छेड़ेगे और दूसरों की मदद करेंगे, सभी कॉमरेडों को अच्छे कम्युनिस्टों के रूप में, महान क्रान्तिकारियों के रूप में विकसित होना है, पार्टी का निर्माण करना है, कॉमरेड शिवदास घोष के विचारों को देश भर में फैला देना है, नई संस्कृति, कम्युनिस्ट संस्कृति के साथ जनता को उनके संघर्ष में संगठित करना है। हमारे प्रिय नेता और शिक्षक कॉमरेड शिवदास घोष को अपनी क्रान्तिकारी श्रद्धांजली अर्पित करने का यही सही तरीका है। इसके साथ ही अपनी बात समाप्त करता हूँ।

सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष—लाल सलाम!
उनके द्वारा स्थापित एसयूसीआई (सी)—जिन्दाबाद!
विश्व क्रान्ति – जिन्दाबाद!
हमारे देश की पूँजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रान्ति-जिन्दाबाद! ●

एसयूसीआई(सी) की मजबूती चाहती है देश की मेहनतकश जनता

घाटशिला (झारखण्ड) में शिवदास घोष स्मृति सभा में कॉमरेड रंजीत धर

झारखण्ड राज्य के घाटशिला स्थित मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तनधारा शिक्षा केन्द्र में 5 अगस्त को कॉमरेड शिवदास घोष स्मृति दिवस मनाया गया। इस दिन सुबह शिक्षा केन्द्र में झण्डारोहण करके और महान नेता के चित्र पर पुष्प अर्पित करके एसयूसीआई(सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड रंजीत धर ने श्रद्धांजलि अर्पित की। उनके अलावा झारखण्ड राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड रबीन समाजपति और शिक्षा केन्द्र के इंचार्ज कॉमरेड मलय बोस ने महान नेता को क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर कॉमसोमोल के सदस्यों ने परेड करके सलामी दी।

शाम के समय शिक्षा केन्द्र के मुख्य सभागार में राज्य के विभिन्न जिलों में आए नेता कार्यकर्त्ता समर्थकों की एक सभा में स्मृति दिवस को मनाने के तात्पर्य को लेकर कॉमरेड रंजीत धर ने चर्चा की। कॉमरेड रबीन समाजपति ने सभा का संचालन किया।

कॉमरेड रंजीत धर ने कहा कि आज से 37 वर्ष पहले कॉमरेड शिवदास घोष का निधन हो गया था। हर साल यह दिन हमारे सामने यह प्रश्न लेकर आता है–क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधूरे काम को पूरा करने की जो जिम्मेदारी कॉमरेड शिवदास घोष हमें दे कर गए हैं कहाँ तक हम उसे पूरा कर पाए हैं, उनके क्रान्तिकारी चिन्तन के आधार पर खुद को कितनी दूर तक हम तैयार कर पाए हैं। उन्होंने कहा, विश्वव्यापी पूँजीवादी व्यवस्था आज अभूतपूर्व संकट में डूबी हुई है। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस जैसे पश्चिम के औद्योगिक तौर पर उन्नत पूँजीवादी-साम्राज्यवादी देशों में आज मेहनतकश लोगों के हालात भयावह हैं। एकतरफ छंटनी, बेरोजगारी, शिक्षा और चिकित्सा का अभाव दूसरी तरफ चरम नैतिक-सांस्कृतिक अध:पतन, नारी उत्पीड़न सामाजिक परिस्थिति को भयावह बना रहा है। इन सब देशों में मजदूर-कर्मचारियों के जीवन में आर्थिक संकट ने आज इतना गंभीर रूप धारण कर लिया है कि वे बीच-बीच में स्वत:स्फूर्त आन्दोलन में फट पड़ रहे हैं। सिर्फ अमेरिका-यूरोप ही नहीं, मध्यपूर्व के देशों में भी लगातार स्वेच्छाचारी शासन-विरोधी जोरदार जुझारू आन्दोलन के साथ जुड़ी हुई है मेहनतकश लोगों की न्यायसंगत मजदूरी देने, रोजगार देने और महंगाई रोकने की मांग। लेकिन दुख की बात है कि सभी जगह जनता की लड़ाई और कुर्बानी, सही क्रान्तिकारी नेतृत्व के अभाव में बेकार चली जा रही है। यह बात समझनी होगी कि आज दुनिया में कही भी, यहाँ तक कि एक जनवादी आन्दोलन भी सही रास्ते और लक्ष्य पर आगे नहीं बढ़ सकता है यदि उस आन्दोलन में असल कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी न रहें। अमेरिका का 'वॉल स्ट्रीट दखल करो' आन्दोलन, मिस्र का स्वेच्छाचार-विरोधी आन्दोलन अथवा हमारे देश में अन्ना हजारे के नेतृत्व में भ्रष्टाचार-विरोधी आन्दोलन हो, सभी मामलों में इतिहाससम्मत सामाजिक परिवर्तन का उद्देश्य लेकर आन्दोलनों को संचालित करने के क्षेत्र में सही नेतृत्व का अभाव दिखाई दिया है। विश्व साम्यवादी आन्दोलन की मौजूदा कमजोर हालत के बारे में बोलते हुए कॉमरेड रंजीत धर ने कहा कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद पूरी दुनिया में साम्यवादी आन्दोलन की विजय यात्रा इतनी दूर तक पहुँच गई थी कि हम लगभग विश्व क्रान्ति की देहलीज पर आ पहुँचे थे–ऐसा कहा जा सकता है। जबकि उस अवस्था के मुकाबले साम्यवादी आन्दोलन, श्रमिक आन्दोलन में चरम शिथिलता छाई हुई है। यह संशोधनवाद से आक्रांत है। संशोधनवाद का हमला ही विश्व साम्यवादी आन्दोलन में भटकाव लाया था और अंतत: प्रतिक्रान्ति करके समाजवादी व्यवस्था को ढा दिया था। प्रबल शक्तिशाली सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी और साम्यवादी आन्दोलन में संशोधनवाद का प्रवेश कैसे हो सका, इसकी व्याख्या करते हुए कॉमरेड शिवदास घोष ने बताया था कि सर्वप्रथम है सैद्धान्तिक चेतना का निम्न स्तर, दूसरे नेता-कार्यकर्ताओं के बीच

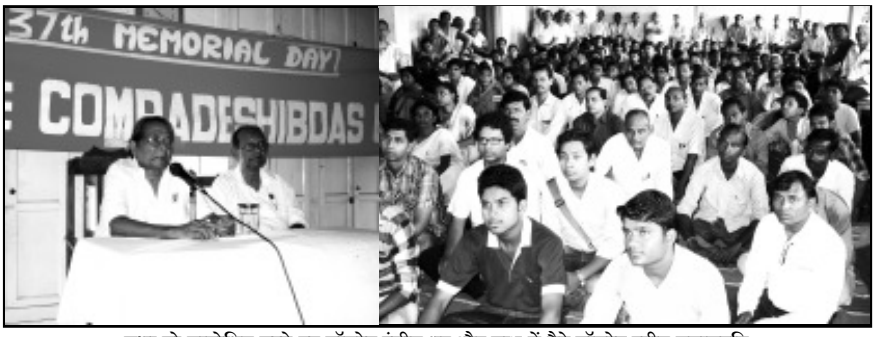

सभा को सम्बोधित करते हुए कॉमरेड रंजीत धर और साथ में बैठे कॉमरेड रबीन समाजपति

द्वन्द्वात्मक सम्बन्ध की बजाय यांत्रिक सम्बन्ध होने एवं सर्वोपरि, बुर्जुआ व्यक्तिवाद के खिलाफ निरन्तर संघर्ष न चला पाने की वजह से ही संशोधनवाद को परास्त नहीं किया जा सका। कॉमरेड शिवदास घोष ने भारत की सरजमीन पर एकमात्र सही कम्युनिस्ट पार्टी एसयूसीआई(सी) के निर्माण की शुरूआत से ही इन विषयों पर अत्यंत जोर दिया था।

कॉमरेड रंजीत धर ने कहा कि भारत में आज मेहनतकश जनता की हालत बहुत चिन्ताजनक है। बाजार में सामानों की कमी नहीं हैं, लेकिन उसे खरीदने की क्षमता अधिकांश लोगो की नहीं है। जबकि अम्बानियों-टाटाओं की सम्पत्ति का कोई ओर-छोर नहीं है। कांग्रेस, बीजेपी, जेएमएम, सीपीआई, सीपीएम जैसी पार्टियाँ सिर्फ वोट की राजनीति में डूबी हुई हैं, शोषक पूँजीपति वर्ग के रुपयों से ये सब पार्टियाँ चलती हैं। ये चुनावी स्वार्थ के लिए धर्म, जात-पात इत्यादि जितने भी फूटपरस्त हथकण्डे हैं उनके जरिए जनता में फूट डाल कर वोट बैंक तैयार करने की घृणित राजनीति का कारोबार करती जा रही हैं। साथ ही साथ शासक वर्ग सुनियोजित तरीके से अश्लीलता और हिंसा की बाढ़ लाता जा रहा है। इन सबके खिलाफ एकमात्र एसयूसीआई (सी) ही लड़ रही है। क्योंकि कॉमरेड शिवदास घोष के हाथों से निर्मित इस क्रान्तिकारी पार्टी को मालिक वर्ग खरीद नहीं सका। भारत के किसी भी प्रांत में जाइए आप सुन पाएंगे, लोग बोल रहे हैं कि यही पार्टी ईमानदार है, लड़ाकू है, लोगों की मांगों को लेकर संघर्ष करती है, अन्याय का प्रतिवाद करती है, इसे और भी ताकतवर बनाना चाहिए। इस तरह आज देश की मेहनतकश जनता चाहती है कि एसयूसीआई(सी) की ताकत में बढ़ोतरी हो।

जनता की इस इच्छा को मर्यादा देनी है तो हमारे अन्दर जो कमजोरियाँ हैं उन्हें जितना जल्दी हो सके दूर करना होगा। पहली बात है हमारे ज्यादातर कार्यकर्ताओं की मास लाइफ (जनता के साथ घुलमिल जाना, रहना-सहना) नहीं है। हम आम तौर पर कार्यक्रमों को केन्द्र करके जनता के पास जाते हैं, हम कार्यक्रम समाप्त होने पर कॉमरेडों के बीच वापस आ जाते हैं, जनता के बीच नहीं रहते हैं। इस रुकावट को हमें दूर करना होगा। हमें मास लाइफ में जाना होगा। दूसरी बात यह है कि वर्ग, क्रान्ति और पार्टी के साथ हमारे एकात्म होने और सर्वहारा संस्कृति अर्जित करने के संघर्ष को खुद के जीवन में और भी जोरदार करना होगा। तीसरी बात यह है कि व्यक्तिगत पहलकदमी को हमें और भी बढ़ाना होगा, साथ ही साथ केन्द्रीयता का भी किसी प्रकार से उल्लंघन न हो यह भी ध्यान रखना पड़ेगा। 'पार्टी ही जीवन, क्रान्ति ही जीवन'–इस आदर्श के आधार पर हम में से प्रत्येक को अपने जीवन को ढालना होगा।

छात्र-युवा कार्यकर्ता यदि सोचें कि एक नौकरी हासिल कर लेंगे, उसके साथ क्रान्ति भी करेंगे तब तो झाँसा रह ही जाता है। एक बार सोच कर देखिए, हमारे देश के राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन में नेताजी, खुदीराम, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद–उनमें से क्या किसी ने कभी पहले अपना कैरियर बना लेने की बात सोची थी? कॉमरेड शिवदास घोष जिस समय इस पार्टी का निर्माण करने के लिए आगे आये, तो उस समय क्या उन्होंने सोचा था कि पहले कुछ रोजगार करेंगे उसके बाद पार्टी बनाएंगे? उन्होंने खुद ही कहा था, जब समर्थन में इतने लोग नहीं थे, यहाँ तक कि सिर छिपाने लायक एक घर का भी बन्दोबस्त नहीं कर सके थे, जब न खा कर दिन पर दिन एक बिल्कुल प्रतिकूल परिवेश में हमें एक नई पार्टी गठित करने के लिए संघर्ष करना पड़ा था, लेकिन इसे लेकर उस समय हमारे मन में कोई क्षोभ नहीं था। हम कितने साल चटाई पर सोए हैं, कितने जाड़े-गर्मियाँ हमने इसी तरह काटे हैं। हमारे उस समय के साथी आज भी उसके गवाह हैं। उन्होंने देखा है कि उस समय भी हमारे मन में कोई भी रोष नहीं था। आप याद रखिएगा, देश के लिए जीवन देने के लिए जो आगे आंएगे, देश की जनता ही अपना दिल खोलकर उनको सहायता देगी। कॉमरेड धर ने कहा कि दुनिया के सभी देशों में और भारत में भी लोग स्वाभाविक है कि परिवर्तन चाह रहे है। अत: क्रान्ति की जमीन तैयार है, जरूरत है पर्याप्त शक्ति लिए हुए क्रान्तिकारी पार्टी के नेतृत्व का स्थापित होना। इसीलिए पार्टी को और भी मजबूत करो, सब कुछ क्रान्ति के लिए बिना शर्त देने का मन लेकर संघर्ष करो। तभी कॉमरेड शिवदास घोष के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकेगी।

'महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार व बलात्कार' विषय पर प्रतियोगिताएं

अहमदाबाद (गुजरात) : गत दिनों यहां ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स ऑर्गेनाइजेशन (ऑल इण्डिया डीएसओ), ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन (ऑल इण्डिया डीवाईओ) और ऑल इण्डिया महिला सांस्कृतिक संगठन (ऑल इण्डिया एमएसएस) द्वारा उपरोक्त विषय पर भाषण प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता, नाट्य मंचन प्रतियोगिता, ऑन द स्पॉट पेन्टिंग और कविता पाठ प्रतिस्पर्धाएं करवाई गई। इनमें अहमदाबाद और आसपास के गांवों के विद्यार्थियों, नौजवानों, महिलाओं, कलाकारों ने भाग लिया। गत वर्ष दिसम्बर महीने में दिल्ली में घटी सामूहिक बलात्कार की घटना और गुजरात राज्य में बलात्कार की बढ़ती घटनाओं के प्रतिवाद के हिस्से के तौर पर इन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इसमें महिलाओं पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ छात्र-नौजवानों का आक्रोश और जन आन्दोलन खड़ा करने की चाह अभिव्यक्त हुई थी।

प्रतियोगिता समारोह में मेहमान के तौर पर आये श्री प्रकाशभाई एन शाह (जाने-माने पत्रकार और सामाजिक कार्यकर्ता), डा. मल्लिकाबेन साराभाई (प्रसिद्ध नृत्यांगना और सामाजिक कार्यकर्त्री) और श्री एस्थरबेन डेविड (प्रसिद्ध चित्रकार और समीक्षक) उपस्थित रहे और विजेताओं को ईनाम और सर्टिफिकेट बांटे। 'हम होंगे कामयाब' गीत के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

छात्रा के हत्यारों की गिरफ्तारी न होने के विरोध में

मुरादाबाद बंद सफल

मुरादाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर महावीर वि.वि. की एमबीबीएस की छात्रा नीरज भड़ाना के हत्यारों की वारदात के एक महीने बाद भी गिरफ्तारी न होने के विरोध में 13 अगस्त को एआईडीवाईओ, एआईएमएसएस और एआईयूटीयूसी के आह्वान पर सुबह 10 बजे से दोपहर 12 बजे तक दो घण्टे का मुरादाबाद बंद पूर्ण सफल हुआ। बंद को जनता का भरपूर समर्थन मिला और शहर की ज्यादातर दुकानें बंद रहीं।

बंद की अवधि समाप्त होने पर इन संगठनों की ओर से एक ज्ञापन महामहिम राष्ट्रपति, भारत के नाम जिला अधिकारी, मुरादाबाद की मार्फत सौंपा गया। डीएम कार्यालय के बाहर सभा की गई। वक्ताओं ने कहा कि नीरज भड़ाना का कातिल जब तक गिरफ्तार नहीं कर लिया जाता तब तक आन्दोलन जारी रहेगा। सभा को जाने-माने साहित्यकार व नवगीतकार डॉ. माहेश्वर तिवारी, विकास मुरादाबादी, अशोक बिश्नोई, ठाकुर सुरेश सिंह एडवोकेट, महावीर प्रसाद एडवोकेट, शशिबाला, कमलेश चहल, प्रदीप अहलूवालिया, मौ. गौरी एडवोकेट, नासिर अली, कुलवंत सिंह, कुलदीप शर्मा आदि ने सम्बोधित किया। सभा का संचालन ऑल इण्डिया डीवाईओ के उ.प्र. राज्याध्यक्ष कॉ. हरिकिशोर सिंह ने किया।

सरकार की मजदूर-विरोधी नीतियों के खिलाफ

कारखाना मजदूरों ने निकाला जुलूस

समालखा (हरियाणा): ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेन्टर (एआईयूटीयूसी) से सम्बधित कारखाना मजदूर यूनियन, समालखा के आह्वान पर यहां औद्योगिक मजदूरों की मांगों को बुलंद करते हुए भारी बारिश के बावजूद 15 अगस्त को जुलूस निकाला। मजदूरों का जुलूस भापरा रोड़ होस्पीटल के पास से शुरू हुआ और बस अड्डा, रेलवे रोड़, काठ मण्डी, गुड़ मण्डी होते हुए नई अनाज मण्डी पहुंच कर सभा में तब्दील हो गया। सभा की अध्यक्षता एआईयूटीयूसी के राज्य सचिव कॉ. हरि प्रकाश ने की। यूनियन के महासचिव कॉ. महेन्द्र सिंह ने संचालन किया और एआईयूटीयूसी के वरिष्ठ राज्य उपाध्यक्ष कॉ. ईश्वर सिंह राठी मुख्य वक्ता थे।

कॉ. राठी ने कहा कि केन्द्र व राज्य सरकारें मजदूर-विरोधी नीतियां लागू कर रही है। इनके फलस्वरूप बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी व भ्रष्टाचार ने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है। स्थाई काम भी ठेके, कैज्यूअल, आउटसोर्सिंग के आधार पर कराये जा रहे हैं। अंधाधुंध छंटनी, वी.आर.एस. व तालाबन्दी से रोजगार छीने जा रहे हैं। मजदूरों का निर्मम शोषण किया जा रहा है। न्यूनतम वेतन, वेज स्लिप, हाजरी कार्ड, हाजरी रजिस्टर में मजदूरों के नाम, ई.एस.आई. व पी.एफ. जैसे अनिवार्य कानूनी प्रावधान भी लागू नहीं हैं। उद्योगों में मालिकों की मनमर्जी चलती है। श्रम कानूनों की धज्जियां उड़ाई जा रही है। मजदूरों के यूनियन बनाने, अपनी मांगों को बुलंद करने व हड़ताल जैसी सामूहिक कार्रवाई करने के बड़े संघर्षों से हासिल जनतांत्रिक अधिकार, ट्रेड यूनियन अधिकार छीने जा रहे हैं।

कॉ. हरि प्रकाश ने कहा कि सरकार देश के सरमायेदारों के हित में निजीकरण, उदारीकरण, भूमण्डलीकरण जैसी मजदूर-विरोधी नीतियां लागू कर रही है। उन्होंने इन नीतियों के खिलाफ जोरदार आन्दोलन गठित करने का आह्वान करते हुए बताया कि आगामी 25 सितम्बर को राज्य स्तर पर और 12 दिसम्बर को देश की राजधानी दिल्ली में ट्रेड यूनियनों के संयुक्त आह्वान पर धरने-प्रदर्शन किये जाएंगे।

सभा को कॉमरेड सुरेश, जीत सिंह, सतपाल, दलबीर सिंह, जयकिशन, राम मेहर सिंह, राममेहर डिकाडला, बलबीर, शेर सिंह, जौहरीमल, रामानंद, प्रमानंद, कृष्ण पण्डित आदि नेताओं भी सम्बोधित किया। उन्होंने मजदूरों से अपनी न्यायसंगत मांगों के लिए जोरदार आन्दोलन गठित करने और 8 अक्तूबर की रोहतक में राज्य स्तरीय रैली में बढ़चढ़ कर शामिल होने की अपील की।

इलाहाबाद में शिक्षा बचाओ सेमिनार

सेमिनार को सम्बोधित करते हुए प्रो. ध्रुवज्योति मुखोपाध्याय

अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति की इलाहाबाद इकाई ने 18 अगस्त को 'शिक्षा में सुधार और उसकी दिशा' विषय पर हरीश चंद्र रिसर्च इन्स्टीच्यूट (एच.आर.आई.) में एक सेमिनार का आयोजन किया। मुख्य वक्ता थे कलकत्ता विश्वविद्यालय के पूर्व प्राफेसर और अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति के सचिव मण्डल के सदस्य प्रो. ध्रुवज्योति मुखोपाध्याय।

सेमिनार का प्रारम्भ एच.आर.आई. के प्रोफेसर तथा प्रख्यात भौतिकीविद प्रो. पिनाकी मजूमदार के वक्तव्य से हुआ। इसके पश्चात् एच.आर.आई. के निदेशक का शिक्षा की वर्तमान दशा के बारे में उनकी चिंता से सम्बन्धित एक वक्तव्य उनकी अनुपस्थिति में पढ़ा गया। मुख्य वक्ता प्रो. मुखोपाध्याय ने शिक्षा की वर्तमान दशा और उनमें किये जा रहे 'सुधारों' की दिशा पर अपना बहुत ही विचारोत्तेजक वक्तव्य रखा तथा वक्त की पुकार को सुन कर शिक्षा पर हो रहे हमलों का प्रतिरोध करने तथा शिक्षा को बचाने के लिये एक मजबूत आन्दोलन खड़ा करने की अपील की। सेमिनार के अंत में, अपने वक्तव्य में अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ समिति के उत्तर प्रदेश इकाई के संयोजक डॉ. एस.के. मालवीय ने श्रोताओं से शिक्षा बचाओ आन्दोलन में शामिल होने व उसे मजबूत बनाने का अनुरोध किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मानवेन्द्र नाथ बेरा ने किया।

सेमिनार में अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के वैज्ञानिक प्रो. अशोक सेन(एचआरआई), प्रो. सुमति राव(एचआरआई), प्रो. तापस कुमार दास(एचआरआई.), प्रो. अशेष दत्त(एचआरआई), प्रो. प्रसेनजित सेन(एचआरआई), प्रो. एके मित्तल(इलाहाबाद वि.वि.), प्रो. संतोष भदौरिया(महात्मा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी वि.वि.) सहित काफी छात्र-शिक्षक शामिल हुए।

शैक्षणिक समस्याओं पर परिचर्चा

सागर (म.प्र.)। अखिल भारतीय शिक्षा बचाओ कमेटी, सागर इकाई ने ज्वलंत शैक्षणिक समस्याओं पर परिचर्चा का आयोजन आदर्श संगीत महाविद्यालय में 4 अगस्त को किया। मुख्य अतिथि थे केन्द्रीय वि.वि. के प्रोफेसर ओ.पी. श्रीवास्तव। केन्द्रीय वि.वि. के हिन्दी विभाग से डॉ. आशुतोष मिश्रा ने कहा कि बाजार के दबाव के चलते राज्य द्वारा उपभोक्ता-उन्मुखी शिक्षा दी जा रही है जबकि मानवीय मूल्यबोध एवं सामाजिक दायित्व निर्वाहन करने वाली शिक्षा दी जानी चाहिए। वि.वि., सागर के मानवशास्त्र विभाग से डॉ. राजेश गौतम, हिन्दी विभाग से डॉ. आलोक, पी.आर. मलैया, अधिवक्ता भारत पटेल, जगमोहन सिंह लोधी, ललित मिश्रा व डॉ. कुसुम सुरभि ने भी अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता कमेटी के राज्य सचिव डॉ. रामावतार शर्मा ने की। उन्होंने कहा कि शिक्षा का आजं यह हाल है कि जिसकी जैसी हैसियत है वह वैसी शिक्षा खरीद रहा है जबकि ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, प्रेमचंद, फूले, नेताजी सुभाष, लाला लाजपत राय जैसे महापुरुषों ने सबके लिए शिक्षा और धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक व जनवादी शिक्षा का सपना देखा था। शिक्षा पर पूँजी और बाजार के हमले हो रहे हैं। स्वार्थी, खुदगर्ज व आत्मकेन्द्रित बनने की शिक्षा दी जा रही है। शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण के खिलाफ उन्होंने शिक्षा प्रेमी लोगों को आगे आने का आह्वान किया।

राकेश पटेल ने गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन अधिवक्ता अशोक कुशवाहा ने किया। गोष्ठी में महेन्द्र जैन, शिक्षक पौराणिक, सोना कुशवाहा, भगतसिंह, गणेश पटेल सहित अनेक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे।

कॉ. शिवदास घोष स्मृति सभा

भोपाल (म.प्र.)। सामुदायिक भवन, न्यू सुभाष नगर, भोपाल में 9 अगस्त को सभा करके कॉमरेड शिवदास घोष का 37वां स्मृति दिवस मनाया गया। सभा के मुख्य वक्ता एसयूसीआई(सी) के कॉमरेड शंकर दासगुप्ता ने कॉमरेड शिवदास घोष के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि यह दिवस मनाना हमारे लिए कोई औपचारिकता मात्र नहीं है और न ही ढर्रे पर चलने वाला कोई प्रोग्राम है। बल्कि कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन को गहराई से समझने का एक प्रयास है, क्योंकि इसे समझे बिना वर्तमान में सामाजिक परिवर्तन के लिए चल रहे आन्दोलन में हम अपनी भूमिका सही ढंग से अदा नहीं कर सकते। इसके अलावा पार्टी की राज्य सांगठनिक कमेटी के सचिव कॉमरेड उमा प्रसाद ने भी सभा को सम्बोधित किया। सभा की अध्यक्षता राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. रामावतार शर्मा ने की। सभा का संचालन राज्य सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. जे.सी. बरई ने किया।

पेट्रोल मूल्यवृद्धि पर रोष प्रदर्शन

महुआ (वैशाली, बिहार) : पेट्रोल-डीजल की अप्रत्याशित मूल्यवृद्धि के खिलाफ एसयूसीआई(सी) की लोकल कमेटी की ओर से रोष प्रदर्शन कर गांधी चौक पर प्रधानमंत्री का पुतला फूंका गया। बाद में कॉ. ललित कुमार घोष की अध्यक्षता में सभा हुई। सभा को समाजसेवी सुमित सहगल, प्रो. राजेश्वर गुप्ता, विश्वनाथ साहू, शोकिन शर्मा आदि वक्ताओं ने सम्बोधित किया।

सर्वहारा दृष्टिकोण पढ़ें और पढ़ायें।
इसके नये ग्राहक बनायें।
बकाया बिक्री राशि तुरंत जमा करायें।

सर्वहारा दृष्टिकोण के सभी पाठकों व पार्टी की राज्य कमेटियों से अनुरोध है कि पत्रिका का वार्षिक शुल्क/बिक्री राशि दिल्ली कार्यालय में तुरंत जमा करायें।

सर्वहारा दृष्टिकोण बैंक खाता नं.
1522000100360826 IFSC Code –
PUNB 0152200, पंजाब नैशनल बैंक,
राजेन्द्र प्लेस शाखा, नई दिल्ली।
प्रबंधक, सर्वहारा दृष्टिकोण

मजदूर-कर्मचारियों के ज्वलंत मुद्दों पर
भिवानी जिला श्रमिक सम्मेलन

भिवानी (हरियाणा): ऑल इण्डिया यूनाइटिड ट्रेड यूनियन सेन्टर (एआईयूटीयूसी) का भिवानी जिला सम्मेलन 25 अगस्त को यहां श्रीचेतराम प्रजापति ध र्मशाला में सम्पन्न हुआ। इसमें मजदूर-कर्मचारियों के सैकड़ों प्रतिनिधियों ने शिरकत की। सम्मेलन की अध्यक्षता संगठन के जिला सचिव धर्मबीर सिंह ने की। एआईयूटीयूसी के राज्य सचिव हरिप्रकाश ने मुख्य वक्ता के तौर पर सम्मेलन को सम्बोधित किया। इस अवसर पर शहर में दिनोद गेट से हांसी गेट तक जुलूस भी निकाला गया। सम्मेलन में सर्वसम्मति से 11 सदस्यीय जिला कमेटी का भी गठन किया गया जिसके अध्यक्ष रामफल और सचिव धर्मबीर को चुना गया।

सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य वक्ता हरि प्रकाश ने कहा कि पूंजीवादी भूमण्डलीकरण के तहत जहां कॉरपोरेट घरानों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की तिजोरियां भरी जा रही हैं वहीं आम आदमी घोर कंगाली और बदहाली में जीने को मजबूर हैं। मंदी से उबरने के लिए पूंजीवादी शासकों द्वारा उठाये गये कदम लोगों को और भी बर्बादी की ओर ढकेल रहे हैं। बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी व भ्रष्टाचार ने लोगों का जीना मुश्किल कर दिया है। शिक्षा, चिकित्सा, बिजली, पानी, रोडवेज जैसी जरूरी जनसेवाओं को मुनाफा लूटने का जरिया बनाया जा रहा है। लाखों खाली पड़े पद भरे नहीं जा रहे हैं। नई भर्ती पर रोक है। कोई नया कल-कारखाना लगता दिखाई नहीं दे रहा है। अनेक कल-कारखाने बंद पड़े हैं। जिले के पहाड़ों में खनन कार्य बंद होने से सभी पत्थर तोड़ मजदूर बेरोजगार हो गये हैं। अंधाधुंध छंटनी, वी. आर.एस. व तालाबन्दी से रोजगार छीने जा रहे हैं। मजदूरों का निर्मम शोषण किया जा रहा है, मान्यता होने पर भी संगठित-असंगठित क्षेत्र में 8 घण्टे का कार्य-दिवस लागू नहीं है, न्यूनतम वेतन, वेज स्लिप, हाजरी कार्ड, हाजरी रजिस्टर में मजदूरों के नाम, ई.एस.आई. व पी.एफ. जैसे अनिवार्य कानूनी प्रावधान भी लागू नहीं हैं। उद्योगों में मालिकों की मनमर्जी से मजदूरों को जब चाहे नौकरी से हटा दिया जाता है। श्रम कानूनों की धज्जियां उड़ाई जा रही है। यूनियन बनाने व हड़ताल करने के बड़े संघर्षों से हासिल जनतांत्रिक अधिकार छीने जा रहे हैं। किसानों को जमीन से बेदखल करके विशेष आर्थिक क्षेत्र (एसईजैड) बनाये जा रहे हैं जिनमें मजदूरों की हालत गुलामों जैसी है।

मजदूर नेता धर्मवीर सिंह ने कहा कि मजदूरों की दिहाड़ी मार ली जाती है। भवन निर्माण श्रमिकों को कल्याण बोर्ड में पंजीकरण कराने और हित लाभ पाने की प्रक्रिया बेहद जटिल है और कई नाजायज शर्तें थोपी हुई हैं। इस वजह से बहुत कम मजदूर-कारीगरों का पंजीकरण हुआ है और कल्याण कोष की बैठक में मुख्यमंत्री द्वारा घोषित विभिन्न स्कीमों की बढ़ायी गई सहायता राशि के लिए वे आज भी तरस रहे हैं। भट्ठा मजदूरों का गुलामों जैसा हाल है। न्यूनतम वेतन 15000 रुपये महीना करना चाहिए और मनरेगा के तहत जो दिहाड़ी दी जाती है वह बाजार में प्रचलित रेट से बहुत कम है। आंगनवाड़ी वर्कर-हैल्पर, आशा वर्कर, मिड-डे-मील वर्कर व ग्रामीण चौकीदार से बहुत कम पैसों में काम लिया जा रहा है। वे काम तो सरकारी करते हैं लेकिन सरकार उन्हें सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने को तैयार नहीं है। उन्होंने मजदूरों से अपनी न्यायसंगत मांगों के लिए जोरदार आन्दोलन गठित करने और 8 अक्तूबर की रोहतक में राज्य स्तरीय रैली में बढ़चढ़ कर शामिल होने की अपील की।

उनके अलावा एआईयूटीयूसी के राज्य कमेटी सदस्य रामफल, भवन निर्माण कारीगर-मजदूर यूनियन हरियाणा (रजि. नं. 1845) के राज्य कोषाध्यक्ष राजकुमार, यूनियन के प्रधान वजीर व अन्य श्रमिक नेताओं ने भी सभा को सम्बोधित किया।

बिजली सम्बन्धी समस्याओं को लेकर विरोध प्रदर्शन

इलाहाबाद (उ.प्र.) : जनप्रतिरोध आन्दोलन समिति, उत्तर प्रदेश की इलाहाबाद इकाई ने 22 अगस्त को जिलाधिकारी कार्यालय पर एक विरोध प्रदर्शन किया तथा अपनी मांगों को लेकर मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश सरकार के नाम एक ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा।

ज्ञापन में की गई प्रमुख मांगे थीं बिजली की दरों में बेतहाशा बढ़ोतरी को तत्काल वापस लेना, शहरों और गांवों में 24 घंटे नियमित रूप से बिजली देना, बिजली विभाग के निजीकरण पर रोक लगाना और गंगा-यमुना के किनारे स्थायी बांध बनाकर बाढ़ की समस्या का स्थायी समाधान करना।

इस अवसर पर एक सभा भी हुई। सभा में मुख्य वक्ता थे कॉ. राजवेन्द्र सिंह। अन्य वक्ताओं में सुमन लता, आशू ठाकुर आदि थे। सभा का संचालन विनोद सिंह ने किया।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :5 September, 2013

सीरिया के खिलाफ युद्ध की धमकी की आईएसीसी ने की कड़ी निन्दा

इन्टरनेशनल एंटी-इम्पीरियलिस्ट कोऑर्डिनेशन कमेटी (आईएसीसी) के महासचिव कॉमरेड माणिक मुखर्जी ने सीरिया पर आक्रमण करने और युद्ध भड़काने की अमेरिकी योजना पर गहरी चिन्ता जताते हुए 29 अगस्त को जारी बयान में कहा :

राष्ट्रपति असद सरकार का तख्ता पलट करने और साम्राज्यवादियों की कठपुतली को सत्ता में बिठाने की खातिर सीरिया पर अमेरिकी आक्रमण के विनाशकारी कदम की निन्दा करने के लिए कोई शब्द काफी नहीं है।

अब यह सर्वविदित है कि इस बात का कोई सबूत नहीं है कि असद सरकार द्वारा रासायनिक हमला किया गया जैसा कि साम्राज्यवादी ताकतें आरोप लगा रही हैं। सीरियाई सरकार ने खुद एक जाँच टीम भेजने के लिए संयुक्त राष्ट्र (यूएन) से अनुरोध किया था ताकि सिद्ध किया जा सके कि सीरियाई सरकार ने रासायनिक गैस का इस्तेमाल नहीं किया है। अब यूएन इन्स्पैक्टर सीरिया में हैं और जाँच टीम से 10 मील दूर एक जगह पर रासायनिक गैस का इस्तेमाल किया गया ठीक उसी दिन जिस दिन टीम सीरिया पहुँची।

जाँच कर्ताओं में से एक कार्ले डेल पोन्टे ने कहा है कि रासायनिक गैस का इस्तेमाल सीरियाई सरकार ने नहीं बल्कि विद्राहियों ने किया था।

हम यह भूल नहीं सकते हैं कि पूरी तरह झूठे बहानों की आड़ में जो बाद में नितांत झूठ और मनगढ़ंत प्रोपैगेण्डा साबित हुए थे, अमेरिका ने कई देशों पर बिना किसी उकसावे वेफ आक्रमण और चढ़ाई की है। इराक और लीबिया दो ताजा मिसाले हैं। 2003 में अमेरिका ने इराक पर हमले का आधार, "जनसंहारक हथियारों की रिपोर्टों" और "रासायनिक व जैविक हथियारों" को बनाया था। हमले और हजारों हजार इराकियों की हत्या और देश की तबाही के बाद यह सिद्ध हो गया कि तथाकथित रिपोर्टें पूरी तरह झूठी थी और इराक के पास कभी ऐसे हथियार नहीं थे।

लीबिया पर अमेरिकी हस्तक्षेप को जनसंहारों, बलात्कारों, विध्वंसों आदि की आड़ में जायज ठहराया गया था। अब गद्दाफी को सत्ता से हटाये जाने के बाद इनमें से कोई भी आरोप सही सिद्ध नहीं हुआ, बल्कि सभी आरोप बेबुनियाद साबित हुए।

अब सीरिया निशाने पर है। मकसद साफ जाहिर है। असल में अमेरिका व इसके सहयोगी मध्यपूर्व पर नियंत्राण कायम करना और अपने-अपने देश के युद्ध सौदागरों के लिए मुनाफे का इंतजाम करना चाहते हैं। युद्ध और हमलों के बिना साम्राज्यवाद जिन्दा नहीं रह सकता है। आईएसीसी दुनिया के युद्ध-विरोधी शान्तिकामी लोगों का आह्वान करती है कि वे साम्राज्यवादी युद्ध सौदागरों के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद करें।

फौज और मुस्लिम ब्रदरहुड दोनों ही जनविरोधी शक्तियों के खिलाफ उठ खड़ा हो मिस्र का अवाम

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट)

एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने 19 अगस्त को निम्नलिखित बयान जारी किया:

14 अगस्त 13 से अमेरिका की शह पाकर मिस्र की फौज के हाथों सैकड़ों मिस्री लोगों की मौत और गम्भीर रूप से जख्मी होने की घटना की हम कड़ी निन्दा करते हैं। याद रखें कि केवल एक साल पहले 'अरब बसंत' नाम से अभिनन्दित मिस्रव्यापी स्वत:स्फूर्त जुझारू जन अभ्युत्थान के दबाव में स्वेच्छाचारी राष्ट्रपति होश्नी मुबारक को सत्ता से हटने पर मजबूर होना पड़ा था ओर उसके जरिए मिस्र की फौज के 41 साल के स्वेच्छाचारी और तानाशही शासन का खात्मा हुआ था। लेकिन मोहम्मद मुरसी के नेतृत्व में संचालित मुस्लिम ब्रदरहुड में अत्याचारी कट्टरपंथी शासन के खिलाफ वर्तमान जनगण के चल रहे जोरदार आन्दोलन जिसने लगभग स्वत:स्फूर्त जन अभ्युत्थान का चरित्र हासिल कर लिया है, उसमें धर्मनिरपेक्ष जनतांत्रिक ताकतों का कोई ताकतवर और मजबूत नेतृत्व न रहने से उसका फायदा उठा कर मिस्र की फौज दोबारा फिर सत्ता में लौट आने की जी जान से कोशिश में है। प्रतिक्रियावादी कट्टरपंथी मुरसी सरकार के खिलाफ और लोकतंत्र की बहाली की मांग पर वर्तमान में विक्षोभ प्रदर्शनकारी लोगों पर बर्बर सैन्य आक्रमण निश्चित तौर पर मुस्लिम ब्रदरहुड को ही फिर अपना मनहूस सिर उठाने में मदद करेगा और वे दोबारा फिर सत्ता पर काबिज होने की कोशिश करेंगे जो कामयाब हुआ तो वह संघर्षशील आम आदमियों के स्वार्थ और लोकतांत्रिक आशा-आकांक्षा के बिल्कुल खिलाफ होगा। इसलिए, हम मिस्र के प्रगतिशील लोकतांत्रिक सोच रखने वाले अवाम का आह्वान करते हैं कि वे अपनी पांतों को मजबूत करें और मुस्लिम ब्रदरहुड जैसी स्वेच्छाचारी कट्टरपंथी ताकतों की सत्ता पर दोबारा कब्जा करने की मनहूस कोशिश को रोकने के लिए उनकी ताकत की बढ़ोतरी और मजबूती के सारे रास्ते बंद करने के लिए हर संभव उपाय का सहारा लें, साथ ही साथ फौज को तुरन्त नृशंस हत्याकांण्ड बंद करने और लोकतंत्र बहाल करने के लिए जनता के हाथों में फौरन सत्ता थमा देने के लिए मजबूर करें।

शिक्षा के सवालों को लेकर छात्र सम्मेलन आयोजित

बंगलौर (कर्नाटक) : फीस वृद्धि, स्कूल-कालेजों व होस्टलों में बुनियादी ढांचे के विकास, छात्राओं की सुरक्षा सहित शिक्षा के ज्वलंत सवालों को लेकर 31 जुलाई को ऑल इंडिया डी एस ओ की ओर से छात्र सम्मेलन किया गया।

जाने-माने स्वतंत्रता सेनानी एच एस डोरैस्वामी ने सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए खेद के साथ कहा कि देश से लोकतंत्र गायब होता जा रहा है। एक तरफ मुट्ठीभर लोग बहुत अमीर होते जा रहे हैं, दूसरी तरफ बहुसंख्यक लोग घोर गरीबी में पड़े हुए हैं। इस असहनीय परिस्थिति में छात्रों को वह शिक्षा और संस्कृति अपनानी होगी जो उन्हें इसके खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करे। पढ़ाई-लिखाई के साथ-साथ गरीबी, बेरोजगारी, गैरबराबरी और महिलाओं पर बढ़ते जा रहे हमलों को रोकने के लिए चरित्र मजबूत करना होगा। संगठन के सर्वभारतीय अध्यक्ष कॉमरेड एमएन श्रीराम ने कहा कि सरकार छात्रों की शिक्षा और उज्जवल भविष्य को सुनिश्चित करने की बजाय उनकी नैतिक रीढ़ तोड़ डालने के लिए प्रचार माध्यमों और इन्टरनेट के जरिये अश्लीलता का प्रचार-प्रसार कर रही है। नैतिकता का इतना पतन हो गया है कि शिक्षा के निजीकरण-व्यापारीकरण और बेहद भ्रष्टाचार को देख कर भी वे इसके खिलाफ आवाज नहीं उठाते। दूसरी तरफ, स्कूलों में पास-फेल प्रणाली हटा कर पठन-पाठन, शिक्षण और मूल्यांकन आदि सब कुछ का मजाक बना कर रख दिया है। शिक्षा का अधिकार कानून के नाम पर करोड़ों छात्रों को शिक्षा से दूर धकेला जा रहा है।

संगठन के राज्य अध्यक्ष कॉ. वी एन राजेश्वर ने कहा कि एससी-एसटी और बीसीएम वेलफेयर कमेटी की सिफारिशों के मुताबिक होस्टलों में छात्रों की मासिक फूड ग्राण्ट 850 रुपये से बढ़ाकर 1500 रुपये की जानी चाहिए और एलपीजी गैस सिलैण्डर की उच्चतम सीमा रद्द करके जरूरत के मुताबिक संख्या में सिलैण्डर सप्लाई किये जाने चाहिएं। सम्मेलन में संगठन के राज्य सचिव और अन्य राज्य स्तरीय नेताओं ने भी अपनी बात रखी।

आंध्र प्रदेश के विभाजन के खिलाफ अनंतपुर में एसयूसीआई(सी) का रोष प्रदर्शन

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. गिरिजेश्वर सिंह द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com